International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-01-2026; Accepted: 11-02-2026; Published: 26-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 170-172

मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में चित्रित दलितों की समस्याएं

विनय चंद्र पांडेय
शोधार्थी, कला संकाय, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हरियाणा, भारत

सारांश
मोहनदास नैमिशराय हिंदी दलित साहित्य के उन प्रमुख रचनाकारों में अग्रणी हैं, जिनकी रचनाएँ वर्णवाद, ब्राह्मणवाद, मनुवाद व्यवस्था के दुर्ग को धवस्त कर दलित, पिछड़े और अधिकारवंचित समाज के लिए मुखर आवाज उठाती हैं। उनकी कहानियाँ दलित जीवन के कटु सत्य और समस्याओं को प्रस्तुत करती हैं जिनमें दलितों की पीड़ा, यातना, शोषण और उत्पीड़न प्रतिबिंबित होता है। नैमिशराय ने दलित होने के नाते जिस तिरष्कार, घृणा और संघर्ष को भोगा उसी का चित्रण अपनी कहानियों में भी किया। तत्कालीन समाज के गर्भ में पोषित और फैल रही सामाजिक, जातिवादी, वर्णवादी समस्याओं के मध्य फँसे एकलव्य, शंबूक और कर्ण जैसे असंख्य दलित पात्रों का यथार्थ वर्णन नैमिशराय की कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियाँ पाठकों को 'स्वांत: सुखाय' और 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की अवधारणा पर सोचने को विवश करती है। इस शोध पत्र में हम 'मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में चित्रित दलितों की समस्याएं' का विश्लेषण करेंगे और उन्हें भारतीय सामाजिक जीवन, न्याय व्यवस्था, दलित चेतना और दलित विमर्श के परिपेक्ष्य में समझेंगे। मोहनदास नैमिशराय की कहानियाँ ऐश्वर्यवादी और काल्पनिक तथ्यों को नकार कर सामाजिक परिदृश्य पर गहरी छाप छोड़ते हुए समता, बन्धुता और स्वंत्रता जैसे शब्दों की अर्थवृत्ता साबित करती है।

मूल शब्दः दलित, दलित–कहानी, दलित समस्या, जातिवाद, ब्राह्मणवाद, अत्याचार, शोषण, आक्रोश और प्रतिरोध

अक्सर कहा जाता है कि परिवर्तन की गति शाश्वत है परन्तु जब भी हम इतिहास के कालखंडों में देखते है तो पाते हैं कि भारतीय समाज में हमेशा सत्ता–संपन्न, शोषक, सवर्ण वर्गों और दीन–हीन, शोषित, अवर्ण वर्गों के मध्य संघर्ष हुआ। परिणाम ज्यादातर शोषित और अधिकार–वंचित वर्गों के विपरीत रहा पर इससे एक क्रांति प्रज्वलित हुई जिसे दलित क्रांति कहा गया। दलित क्रांति का मूल उद्देश्य दलितों के साथ किए जाने वाले सामाजिक भेदभाव, सामाजिक असमानता, सामाजिक उत्पीड़न और दमन की समस्याओं को नष्ट कर सामाजिक समानता, सम्मान और न्याय के मूल्यों को स्थापित करना रहा। दलित क्रांति का वैचारिक हथियार बना दलित साहित्य जिसे कबीर, रैदास, फुले, पेरियार और डॉ. अंबेडकर जैसे मनीषियों ने अपने मंतव्य विचारों से आधार प्रदान किया और प्रयास किया कि समकालीन समाज में मनुवादी अवधारणाओं और रूढ़िवादी मिथकों को तोड़कर सामाजिक समानता और मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जा सकें।

स्वातंत्र्योत्तर देश संविधान की छाँव में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक मामलों में समृद्धि की राह पर अग्रसर हुआ पर सामाजिक समानता और न्याय के आभाव में दलितों की समस्याएं पीछे छूट गयी जिस कारण प्राचीन काल से चली आ रही भेदभाव, जातिवाद, हिंसा और असुरक्षा, शैक्षिक और आर्थिक विपन्नता की समस्याएं समाज में यथावत बनी रहीं।

इन्हीं समस्याओं को केंद्र में रखकर दलित रचनाकारों ने जब अपनी कलम चलाई तो बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के दलित रचनाकारों के मध्य मोहनदास नैमिशराय अपनी एक अलग प्रखर पहचान बना कर उभरे। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से दलितों की व्यथा को शब्दों की शक्ल में कागज पर उतारा। उनकी कहानियों में दलितों की पीड़ा, दुर्दशा, आक्रोश, प्रतिरोध और विद्रोह की भावनाएँ चित्रित हुई जो भारतीय सामाजिक संरचना का यथार्थ प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में अधिनायकवाद, सामंतवाद और ब्राह्मणवाद की आड़ में दलितों के सामाजिक, आर्थिक शोषण को उजागर किया गया। मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में वर्ग–संघर्ष और जाति–व्यवस्था का चित्रण अत्यंत प्रमुखता से हुआ है। वे दर्शाते हैं कैसे समाज में जातिवादी मानसिकता के कारण दलितों के लिए समस्याएं उत्पन्न होती है जो देखते देखते संघर्ष और भयानक स्थितियों में परिवर्तित हो जाती है।

'आवाजें' कहानी में मकदूमपुर गांव के परिवेश का चित्रण दिखता है जिसमें एक और मेहतरों की विपन्नता है तो दूसरी और ठाकुरों की दबंगई दिखाई देती है। कहानी का मुख्य पात्र ठाकुर औतार सिंह है। गांव में जातिवादी वातावरण के कारण मेहतर पीढ़ियों से साफ़ सफाई करते आ रहे हैं, परन्तु एक दिन मेहतर आत्म–जागरूकता के कारण जब पारम्परिक कार्य करने से मना करते है तो ठाकुर औतार सिंह के जातीय अहं को ठेस पहुँचती है। परिणाम मेहतरों को डकैती के झूठे मुकदमों में जेल में बंद कर मारपीट की जाती है ताकि वे डर जाए और फिर से गुलामी करें। यह मामला न जाने कैसे दैनिक अखबारों की सुर्ख़ियों और मिनिस्टर की नजरों में आया कि कैसे मेहतरों पर जातिगत अत्याचार किए जा रहे हैं नतीजा मेहतरों की रिहाई। मेहतरों के बीच खुशी थी की उन्होंने इस व्यवस्था पर विजय पाई पर ठाकुर औतार सिंह के लिए यह निजी हार थी। भला जातिवादी दानव, वर्षों से शोषित लोगों से कैसे हार मान सकता था। "आधी रात का समय रहा होगा। मेहतरों के टोले में आग की लपटें देखी गई, जो लपलपाती हुई ऊंची होने लगी थी। शराब में धुत किसी को होश न था। जब होश आया तो वे सब कुछ गवां चुके थे। किसी के चार सूअर थे, तो चारों ही झुलस गए थे। बच्चों तक को आग ने माफ़ न किया था। कितनी ही औरतों के गोरे शरीर जलकर बदरंग हो गए थे। बस्ती में कोई घर ऐसा न था जिसमें कोई न मरा हो।"[1] प्रस्तुत उद्दरण में नैमिशराय ने सवर्णों के मध्य दलितों के लिए पनप रही वैमनस्यता को उजागर किया है। नैमिशराय ने दर्शाया है कि जातिवादी मानसिकता दलितों के आत्मसम्मान को कुचलने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है।

'ख़बरवा बाबू' कहानी में लेखक अपने मित्रों के साथ बरेली से सोरठ गांव एक कार्यक्रम को कवर करने गए थे। गांव में दो रास्ते थे एक सवर्णों की और जाता था एक दलितों की और, गांव के सभी संसधानों पर सवर्ण जातियों का प्रभुत्व था शासन भी पुलिस भी सब उनकी थी। कार्यक्रम शरू होने से पहले जब

लेखक अपने मित्रों के साथ गांव में भ्रमण कर रहें होते हैं तो उन्हें पता चला कि गांव में दो वर्ष पूर्व राजपूतों ने चार दलितों को जातीयता के नाम पर मार डाला था तब जाकर पुलिस चौकी खुली। गांव के लोगों से बात करते हुए किसन कुमार गौतम उर्फ़ ख़बरवा बाबू के बारे में पता चला की वह एक दलित पत्रकार है और उसने ठाकुर सब–इंस्पेक्टर के खिलाफ खबर छापने की हिमाकत की थी। अपने खिलाफ खबर का पता लगते ही ठाकुर सब–इंस्पेक्टर ने उसके साथ मारपीट की और गुंडों से भी पिटवाया। गांव और पुलिस चौकी में जातीयता का दृश्य एक ही था। लेखक प्रस्तुत कहानी में दर्शाता है कि जाति के कारण समाज में लगातार जहर फैल रहा है और घृणा बढ़ रही है। समकालीन समाज में जातिवाद की जड़ें इतनी गहरी पसर गयी है कि इसने दलितों के सामान्य जीवन और उनके प्रति समाज की दृष्टि को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। दलित समाज में जातीयता और दमन के खिलाफ आक्रोश तो है पर वे इस दीवार को तोड़ नहीं पा रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में पता लगता है ख़बरवा बाबू अस्पताल में चल बसे।

जातिवादिता के परिपेक्ष्य में गांव और शहर में एक मूलभूत फर्क दिखता है गांव में जातिवादिता का प्रत्यक्ष रूप दिखता है जबकि शहर में इसका परोक्ष। शहर में सवर्ण वर्ग जातिवादी संघर्ष की स्थितियों से बचना चाहते है जिसके लिए वे अक्सर कौटिल्य नीति का सहारा लेते है। 'हारे हुए लोग' कहानी में दर्शाया गया है कि कैसे महानगरों में दलितों को केवल जाति के कारण उत्पन्न समस्याओं और सवर्णों की कुटिल निति का सामना करना पड़ता है। कहानी का मुख्य पात्र चेतराम कुरील है जो पदोन्नति और स्थानांतरण के कारण शहर आया है। उसे लगभग एक माह हो चुका है परन्तु किराए पर कोई घर नहीं मिल पा रहा कारण उसकी दलित जाति है। उसके कई प्रयत्न करने के उपरांत भी नतीजा वहीं है। उसी के एक सहकर्मी ने उसकी स्थिति देखते हुए उसे एक किराए का घर बताया है। कुरील जब वहाँ जाता है तो उसे लगता है वे सरल, आस्तिक, इज्जतदार और जातिनिरपेक्ष लोग हैं पर जैसे–जैसे उनके मध्य चर्चा होती है वह पाता है वे भी औरों की तरह ही जातिवादी मानसिकता का समर्थन करते हैं पर खुद को अलग दिखाने की कोशिश करते हैं। कुरील की जाति जानने के बाद वे इस चतुराई और नम्रता से बहाने बनाते है की कुरील खुद ही मना कर देता है। प्रस्तुत कहानी में मोहनदास नैमिशराय ने समाज के आभिजात्य वर्ग के झूठे आदर्शों और जातिवादी दृष्टि को दर्शाया है जो परोक्ष रूप से जातिवादिता का समर्थन करते हैं पर प्रत्यक्ष रूप से सबके समक्ष हर किसी को बराबर मानते हैं।

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जाति की विचारधारा और उससे जन्मना भेद–भाव का समर्थन साम्प्रदायिकता को जन्म देता है। "साम्प्रदायिकता किसी संप्रदाय से संबंधित होने का भाव, संप्रदाय के प्रति कट्टरता का भाव, दूसरे संप्रदाय के अहित पर अपने संप्रदाय की हित रक्षा।"[2] भारतीय इतिहास को देखे तो पता लगता है कि साम्प्रदायिकता देश के सामने पिछले कई दशकों से एक गंभीर समस्या बनकर उभरी है और इसका सबसे ज़्यादा दुष्प्रभाव दलित समाज ने झेला है। मोहनदास नैमिशराय अपने निजी अनुभव के आधार पर लिखते हैं "मै जिस शहर मेरठ में पलकर बड़ा हुआ, वही शहर साम्प्रदायिक दंगो की आग में झुलसता रहा। शहर में बस्ती–बस्ती आग बरस रही है, मार–काट मची है। लोग चीखते–चिल्लाते जान बचाकर भाग रहे हैं। वैसा खौफनाक मंजर बचपन में देखा और जवानी में भी। मेरठ शहर का चप्पा–चप्पा हिन्दू–मुस्लिम दंगो का चमश्दीद गवाह रहा है।"[3] 'घायल शहर की एक बस्ती' कहानी में नैमिशराय ने साम्प्रदायिकता के विकृत पक्ष का चित्रण किया है। "जब–जब भी इस शहर में दंगा होता है तब–तब ही समूचा शहर कब्रिस्तान सरीखा बन जाता है। पागल प्रेत और पिशाचों का नाच होने लगता है। अनगिनत दुर्घटनाओं की कहानियां खून से लिखी जाती है। मकानों में, दुकानों में तथा सड़क के किसी सुनसान छोर पर वही इंसान जो साथ–साथ जीता तथा मरता है, अचानक भावुक होकर मजहब की एक ख़ास पहचान अपने साइन में बना लेता है। तब उसके हाथ में चाकू होते हैं, छुरियां होती हैं। वह भाषा समझता हैं तो गोली और बम की।"[4] चाहे नूर कसाई हो या रघु या सुमंगली या फिर नत्थू सबकी दशा एक जैसी ही थी। इस माहौल ने किसी का रोजगार छिन लिया तो किसी का ठप कर दिया था। पिछले कई दिनों से लोगों के घर पर चूल्हा तक ना जला था केवल एक डर था कि क्या पता कब कोई भीड़, धर्म के नाम पर उन्माद कर दे। रफीकन का बेटा जो पंचर लगाता था किसी ने उसे चाकू मार दिया तो दूसरी तरफ हरिया जो काम की तलाश में गया था किसी ने उसे गोली मार दी। मोहनदास नैमिशराय ने कहानी में साम्प्रदायिकता और दलित के परिपेक्ष्य में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है कि "दंगे में आखिर गरीब आदमी ही क्यूँ मरता है, अमीर क्यूँ नहीं?"[5] स्पष्ट उत्तर है कि दलित निसहाय और अकिंचन है इसीलिए साम्प्रदायिक दंगो का सबसे ज्यादा प्रयोग इनपर ही होता है।

दलित लेखकों की विशेषता होती है कि वे प्राय: कवि, कथाकार और विचारक होते है शायद इसलिए समाज की हर घटना पर उनकी सूक्ष्म नजर होती है। मोहनदास नैमिशराय भी इस अपवाद से परे नहीं हैं। भारतीय समाज में दलित स्त्रियों की स्थिति किसी से छुपी नहीं है। शायद ही ऐसा कोई दिन हो जब दैनिक समाचार पत्रों में दलित महिला की अस्मिता को नग्न करने का समाचार न छपा हो। नैमिशराय ने समाज में दलित स्त्री की इसी दारुण्य स्थिति का मार्मिक वर्णन अपनी कहानियों में किया है। सामाजिक असमानता और अन्याय से उत्पन्न आर्थिक समस्याओं ने दलित स्त्रियों के शोषण में सदा मुख्य भूमिका निभाई है। इस तथ्य का चित्रण नैमिशराय ने कहानी 'उसके जख्म' मे किया है। कहानी के मुख्य पात्र वृद्ध हरिया उसकी बेटी कमला और जमींदार रणवीर सिंह है। हरिया भूमिहीन मजदूर है जो जमींदार के खेतों में मजदूरी करता है। आर्थिक और सामाजिक सम्पन्नता के नशे में चूर जमींदार रणवीर सिंह एक रात मौका पाते ही कमला की इज्जत पर हाथ डालता है। जमींदार इस बात से बेफिक्र है कि कमला उसका कुछ कर बिगाड़ सकती है क्योंकि कोई भी सामाजिक और आर्थिक साधन उसके पास नहीं है। कमला न्याय के लिए अदालत जाती है पर वकील करने के लिए उसके पास धन नहीं है। गांव में हर कोई उससे दूर रहना चाहता है और उसमें ही दोष ढूंढता है। जमींदार अपने आर्थिक संसाधनों के बूते अच्छा वकील कर झूठ को आसानी से सच में बदल देता है नतीजा कमला केस हार जाती है। यह दर्शाता है की आर्थिक विपन्नता शोषितों को शोषक के सामने झुकने और बेवजह सामाजिक अन्याय सहने को विवश करती है।

स्वंत्रत भारत में परंपरा के नाम पर दलित स्त्रियों के शोषण को 'रीत' कहानी में दर्शाया गया है। किसनपुरा गांव में एक और चमारों के घर थे और दूसरी और जमींदारों के। जमींदार दिन के उजाले में दलितों को हिकारत भरी नजरों से देखते है और रात के अँधेरे में इन्हीं की औरतों के साथ जोर जबरदस्ती करते है। बुलाकी की दुल्हन बनके फूलो ब्याह के बाद पहली बार आयी थी इस गांव में। पूरी तरह अनजान थी फूलो इस गांव की रीत से जहाँ दलित स्त्रियों का शोषण एक परंपरा थी। विवाह की पहली रात फूलो ने जमींदार के साथ बितायी थी। न जाने कितनी दुल्हनें डंसी होगी इस वासना के नाग ने। मोहनदास नैमिशराय ने दर्शाया है न जाने कितने दलितों ने सवर्णों के षड़यंत्रों में फँस कर शारीरिक शोषण को अपना भाग्य माना और उससे संधि की। कहानी के अंत में दलित चेतना निहितार्थ हुई है जो इस शोषण के चक्र को तोड़ती है और दलितों में आत्म चेतना को जगाती है।

समाज में उचित मजदूरी की मांग करने पर उच्च जाति के भूस्वामियों द्वारा दलितों के साथ प्राय: उत्पीड़न और शारीरिक हिंसा की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। कड़े प्रतिरोधों के बावजूद भी ऐसी घटनाएं हमारे सामने आती है जो उच्च वर्ग की घृणित मानसिकता को दर्शाती है। 'मंजूरी' कहानी में सुमति दलित है, वह महेश से अपनी बकाया मजदूरी के पैसे लेने आयी है पर उसे घर में घुसने तक नहीं दिया जाता। वह मजदूरी की मिन्नतें करती रहती है परन्तु उसे बाद में आना बोलकर वापस भेज दिया जाता है। ज्योतिराव फुले ने कहा था 'शूद्र और अतिशूद्र की मेहनत पर सवर्ण वर्ग ऐश करता है, पर उन्हें उनके परिश्रम का उचित फल नहीं मिलता।' सुमति जब पुनः बकाया मजदूरी लेने वापस आती है तो महेश अपने नए घर का गृह प्रवेश कर रहा होता है। सुमति जब सबके सामने उससे अपने मजदूरी की मांग करती है और उसकी तथाकथित प्रतिष्ठा को सबके सामने उजागर करती है तो महेश बौखला जाता है। "महेश अब तक रोमी को इशारा कर चुका था। रोमी ने उसके हाथ को मुँह में ले लिया था। नुकीले दाँत गड़ गये थे उसकी कलाई पर। जहाँ खून उभर आया था। रहे–सहे कपडे भी फट गये थे। कई जगह काटा था रोमी ने उसे। वह चिल्लाती रही थी, पर कोई नहीं आया था उसे कुत्ते से बचाने।"[6] इस हमले से सुमति घायल हो जाती है और उसकी मृत्यु हो जाती है। मोहनदास नैमिशराय ने दर्शाया है कि दलितों का श्रम सस्ता और सवर्णों का श्रम महंगा यही सोच आर्थिक अन्याय और शोषण को जन्म देती है जिस कारण आज समाज में दलित हाशिए पर पहुंच गए है।

दलितों को पलायन और धर्म–परिवर्तन सामाजिक भेदभाव, आर्थिक पिछड़ेपन और उत्पीड़न से मुक्त होने का एक तरीखा लगता है जिससे वे समाज में समानता और सम्मान पा सकें। नैमिशराय ने अपनी कहानियों में दर्शाया है कि कैसे पलायन और धर्म–परिवर्तन के नाम पर दलितों के जीवन से खेला जा रहा है। 'यात्रा' कहानी की मुख्य पात्र मुरिया नाम की आदिवासी लड़की है जो परिवेश के साथ बदली गयी। कहानी में भूमंडलीकरण के कारण विस्थापन और धर्म–परिवर्तन को दर्शाया गया है। कहानी की मुख्य पात्र मुरिया को पता ही नहीं चला कब उसकी जगह मारिया ने ले ली। परिवेश में छुपे दुश्मनों को पता है "आदिवासी जीवन और उनकी अस्मिता बचाने के लिए अब कोई और बिरसा मुंडा नहीं आएगा।"[7] धर्म–परिवर्तन तो मारिया का हुआ ही पर विस्थापन तो उसकी सम्पूर्ण स्मृतियों का हुआ। जंगल से शहर आकर बसने की जद्दोजहद ने उसे मारिया से मोनिका बना दिया। मोहनदास नैमिशराय ने उक्त उद्दरण में स्पष्ट तरीके से दर्शाया है कि दलितों के धर्म–परिवर्तन और विस्थापन को समझने के लिए समाज में गरीबी और जाति के सूक्ष्म और दोहरे शोषण को समझना होगा।

निष्कर्ष

अंत: कहा जा सकता है कि नैमिशराय का साहित्य अधिकारवंचित समाज व मुख्यधारा से कटे लोगों के दर्द, पीड़ा, चिंताओं, समस्याओं को वाणी देने की निरंतर कोशिश करता है। नैमिशराय की कहानियाँ वर्णवादी व्यवस्था और ब्राह्मणवादी विचारधारा के अधीन समाज में आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। वास्तव में उनकी रचनाएँ कहानियाँ कम दलितों के जीवन का सफरनामा अधिक है इसलिए उनकी कहानियों में चित्रित पात्र जमीनी सच्चाईयों से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं जो अपनी समस्याओं के प्रति सचेत और संघर्षरत है। अंत में कहा जा सकता है कि नैमिशराय का साहित्य क्रांतिकारी और प्रगतिशील साहित्य की महत्वपूर्ण संपत्ति है जिसका उद्देश्य दलित समाज को कुंठित व्यवस्था के अन्याय और षडयंत्रो के खिलाफ संघर्षशील होने की प्रेरणा देना रहा है।

संदर्भ सूची

1. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ट संख्या 24
2. डॉ. यशवंत बिष्ट, साम्प्रदायिकता एक चुनौती और चेतना, पृष्ट संख्या 48
3. डॉ. शारदा प्रसाद, समकालीन समीक्षा के सोपान, पृष्ट संख्या 72
4. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ट संख्या 28
5. मोहनदास नैमिशराय, आवाजें, पृष्ट संख्या 29
6. मोहनदास नैमिशराय, बीस दिनों की जन्नत, पृष्ट संख्या 46
7. मोहनदास नैमिशराय, मोहनदास नैमिशराय: चुनी हुई कहानियाँ,पृष्ट संख्या 87